जे०पी० आंदोलन के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ– एक विश्लेषण

मोनीम अख्तर

सारांश–देश की राजनीति में निरंकुशता, स्वेच्छाचारिता और असीमित भ्रष्टाचार के कारण स्थिति गंभीर हो गयी थी। नागरिकों के निजी जीवन में सरकार का हस्तक्षेप बढ़ने लगा। साथ ही उनके मौलिक अधिकारों को लगभग खत्म कर दिया गया। जनता का अपने प्रतिनिधियों और सरकार पर कोई नियंत्रण नहीं रहा। दूसरी ओर महंगाई, शोषण, भ्रष्टाचार, वर्गभेद और पूंजीवाद का विकास तथा निकम्मी शिक्षा व्यवस्था के फलस्वरूप देश की अधिकांश जनता में बेचैनी और असुरक्षा की भावना बढ़ने लगी। देश में उत्पन्न इस विकराल समस्याओं के विरुद्ध जनता का तत्कालीन सरकार के प्रति असंतोष फूटने लगा। लोग जगह–जगह धरना–प्रदर्शन करने लगे, जिसकी अगुवाई देश के तरुण और युवकों के द्वारा किया गया। सन् 1973 तक देश का रुख बदलने लगा। इंदिरा गांधी की नेतृत्व क्षमता और कांग्रेस सरकार की साख कमजोर होने लगी। लोगों में व्याप्त असंतोष और अशांति ने देश को क्रांति के कगार पर ला दिया। जिसकी अभिव्यक्ति सन् 1974 के जे०पी० आंदोलन के रूप में हुई।